सिंड्रेला

लेखक: चार्ल्स पेरों
पुनर्कथन: एमी इयरलिक
हिंदी: नीला त्रिवेदी



सिंड्रेला





कलाकारों के लिये
कूकी, डेनियल, केरेन, पैट्रिशिया, एलिज़ाबेथ





सिंड्रेला

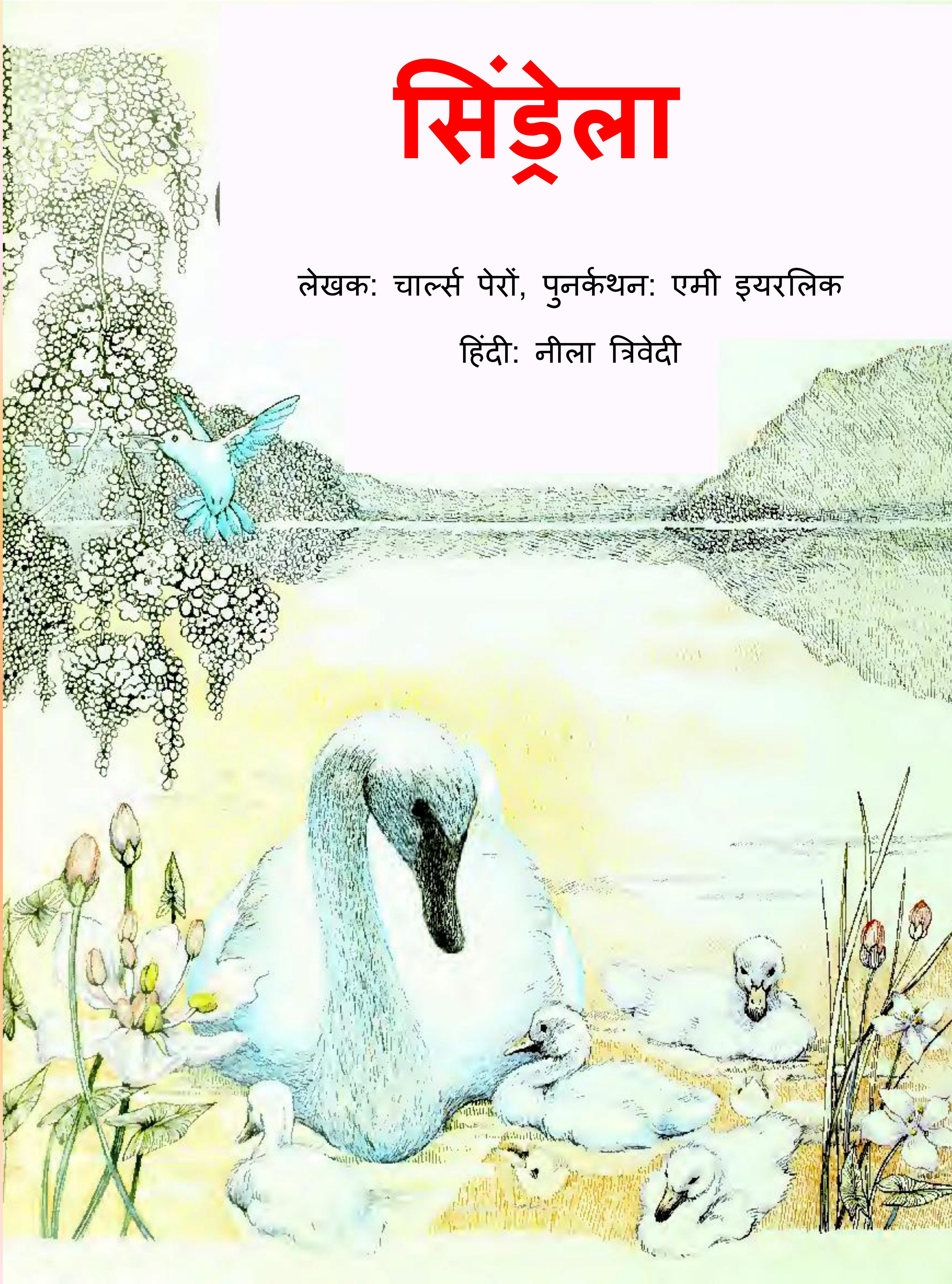
लेखक: चार्ल्स पेरों, पुनर्कथन: एमी इयरलिक

हिंदी: नीला त्रिवेदी

सिंड्रेला

लेखक: चार्ल्स पेरों, पुनर्कथन: एमी इयरलिक

हिंदी: नीला त्रिवेदी





एक बार एक आदमी था। उसकी पत्नी मर गई, इसलिए उसने दूसरी शादी कर ली। नई पत्नी बहुत घमंडी और अभिमानी थी, और उसकी दो बेटियां भी थीं जो बिल्कुल अपनी माँ जैसी थीं। लेकिन उस आदमी की एक बेटी पहले से थी, और वो बहुत मीठी, भोली और सोने जैसी अच्छी थी।

शादी खत्म होते ही नई औरत ने अपनी सौतेली बेटी की जिंदगी नरक बना दी। सुबह से लेकर रात तक उस लड़की से सारे घर का काम करवाया जाता था - बर्तन मांजना, फर्श साफ करना और अपनी सौतेली बहनों के पीछे सफाई करना। लड़की ने जो भी कहा गया वो सब किया और कभी शिकायत नहीं की, क्योंकि वो अपने पिता से डरती थी। वो जानती थी कि पिता उसे ही डांटेंगे, क्योंकि घर में नई पत्नी का ही राज चलता था।



जब वो अपना सारा काम खत्म कर लेती थी, तो चिमनी के कोने में जाकर राख के बीच चुपचाप बैठ जाती थी। इसी वजह से उसे "सिंडर- वेंच" यानी "राख वाली नौकरानी" कहा जाने लगा। लेकिन छोटी सौतेली बहन, जो बाकियों जितनी बदतमीज नहीं थी, उसे "सिंड्रेला" कहकर बुलाती थी। फटे-पुराने कपड़ों में और गंदे चेहरे के साथ भी सिंड्रेला अपनी दोनों सौतेली बहनों से सौ गुना ज्यादा सुंदर लगती थी।



कुछ महीनों बाद राजा के बेटे ने एक बॉल पार्टी रखी और पूरे इलाके के सभी स्टाइलिश लोगों को उसमें बुलाया। दोनों सौतेली बहनों को भी न्योता मिला। उन्होंने तुरंत अपने गाउन, पेटीकोट, बालों के गहने और जूते चुनने शुरू कर दिए कि पार्टी में क्या पहनना है। इसकी वजह से सिंड्रेला का काम और भी बढ़ गया, क्योंकि उनके कपड़े प्रेस करना, फ्रिल्स (झालर) लगाना, सब उसी को करना पड़ता था। दिन भर दोनों बहनें बस इसी बारे में बात करती रहती थीं कि पार्टी में वो कैसे तैयार होंगी।



एक रात जब सिंड्रेला उनकी मदद कर रही थी, तो उन्होंने उससे कहा,

"सिंड्रेला, क्या तुम बॉल में जाना नहीं चाहोगी?"

"अरे बहनों, मेरा मजाक मत उड़ाओ," उसने कहा। "मैं ऐसे सपने कैसे देख सकती हूं?"

"तुम ठीक कह रही हो," उन्होंने जवाब दिया। "अगर कोई राख वाली नौकरानी बॉल में जाएगी तो लोग जरूर हंसेंगे।"

दो दिन तक बहनें उत्तेजना (एक्साइटमेंट) की वजह से मुश्किल से खा पाईं। वो अपने कॉर्सेट इतने कस के बांध रही थीं कि एक दर्जन फीते टूट गए। और वो हमेशा शीशे के सामने खड़ी होकर अपने गाउन पहन कर देख रही थीं।

आखिरकार बॉल की शाम आ गई। सिंड्रेला ने बहनों को दरबार के लिए जाते हुए देखा, और जब वो उनकी नजरों से ओझल हो गईं, तो वो रोने लगी।



उसकी गॉडमदर, जो एक परी थी, ने उसके आंसू देखे और पूछा क्या बात है।

"काश मैं — काश मैं — बॉल में जा पाती," सिंड्रेला हकलाते हुए बोली, लेकिन रोने की वजह से वो और कुछ नहीं कह पाई।

"अच्छा, तो तुम जरूर जाओगी," उसकी गॉडमदर ने कहा। फिर उसने लड़की से कहा कि बगीचे में जाकर एक कद्दू लेकर आए। सिंड्रेला ने सबसे अच्छा कद्दू ढूंढा और उसे घर के अंदर ले आई। उसकी गॉडमदर ने उसे खोखला किया और अपनी छड़ी से छुआ। तुरंत ही कद्दू एक सुंदर सुनहरी गाड़ी में बदल गया।

इसके बाद उसकी गॉडमदर चूहेदानी देखने गई, जहां उसे छह जिंदा चूहे मिले। उसने अपनी छड़ी से हर एक को छुआ और वो सफेद घोड़ों में बदल गए। गाड़ी खींचने के लिए एकदम बढ़िया घोड़े।





लेकिन अब भी एक कोचमैन की जरूरत थी, तो सिंड्रेला चूहेदानी लेकर अपनी गॉडमदर के पास आई। अंदर तीन चूहे थे। गॉडमदर ने सबसे लंबी मूछों वाला चुना, और जैसे ही उसने उसे छड़ी से छुआ, वो एक मोटा कोचमैन बन गया जिसकी बहुत घनी दाढ़ी थी।

उसके बाद गॉडमदर ने छह छिपकलियों को पैदल चलने वाले नौकरों में बदल दिया, जो गाड़ी के पीछे कूद कर ऐसे पकड़ कर बैठ गए जैसे वो यही काम पूरी जिंदगी करते आए हों।

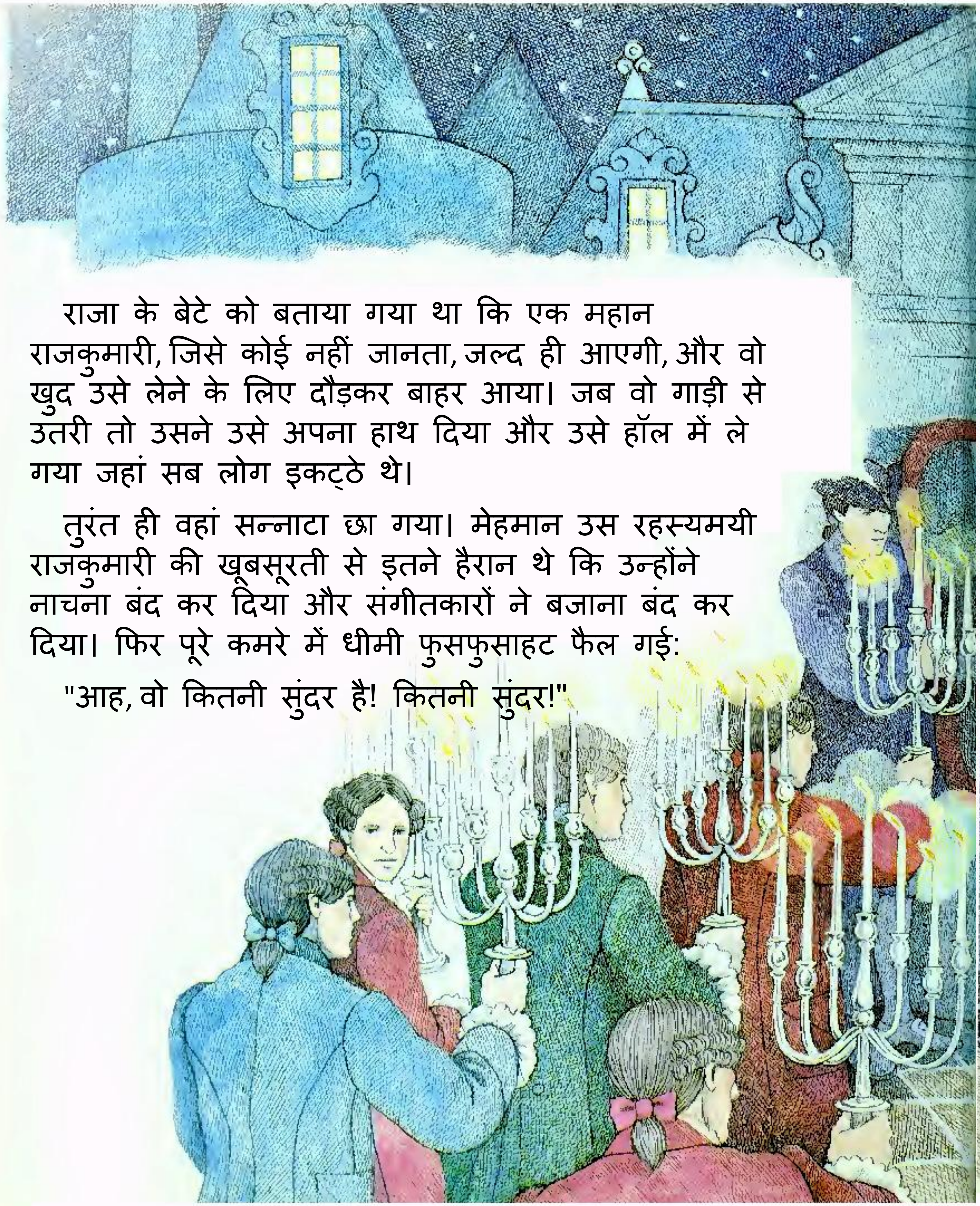
फिर उसकी गॉडमदर ने सिंड्रेला से कहा, "अच्छा बेटी, ये रही तुम्हारी गाड़ी। मुझे उम्मीद है तुम्हें पसंद आएगी।"

"ओह, हां!" लड़की चिल्लाई। "लेकिन क्या मैं इन फटे-पुराने कपड़ों में बॉल में जाऊंगी?"

उसकी गॉडमदर ने बस अपनी छड़ी से सिंड्रेला को छुआ और तुरंत उसके कपड़े चांदी के गाउन में ...



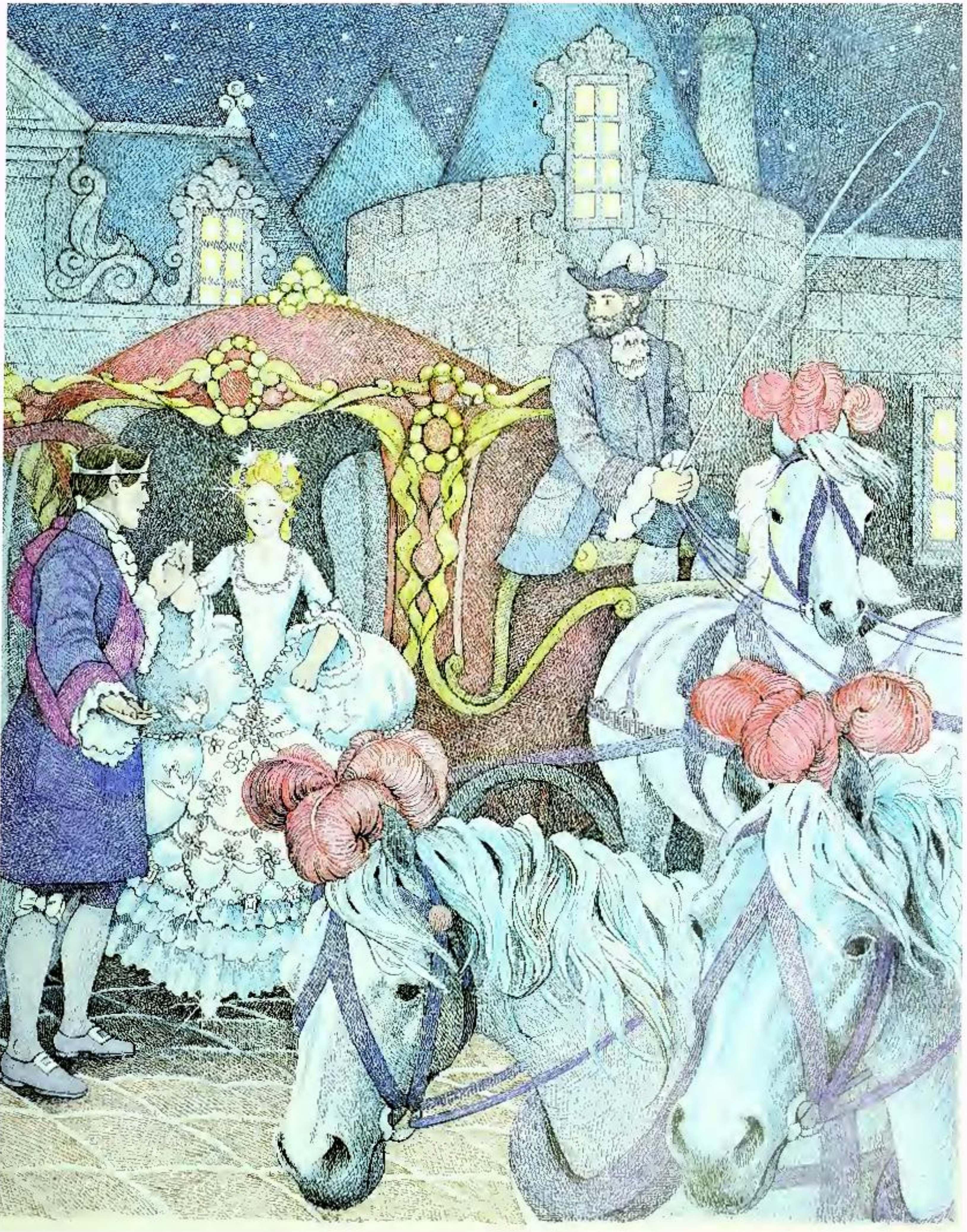


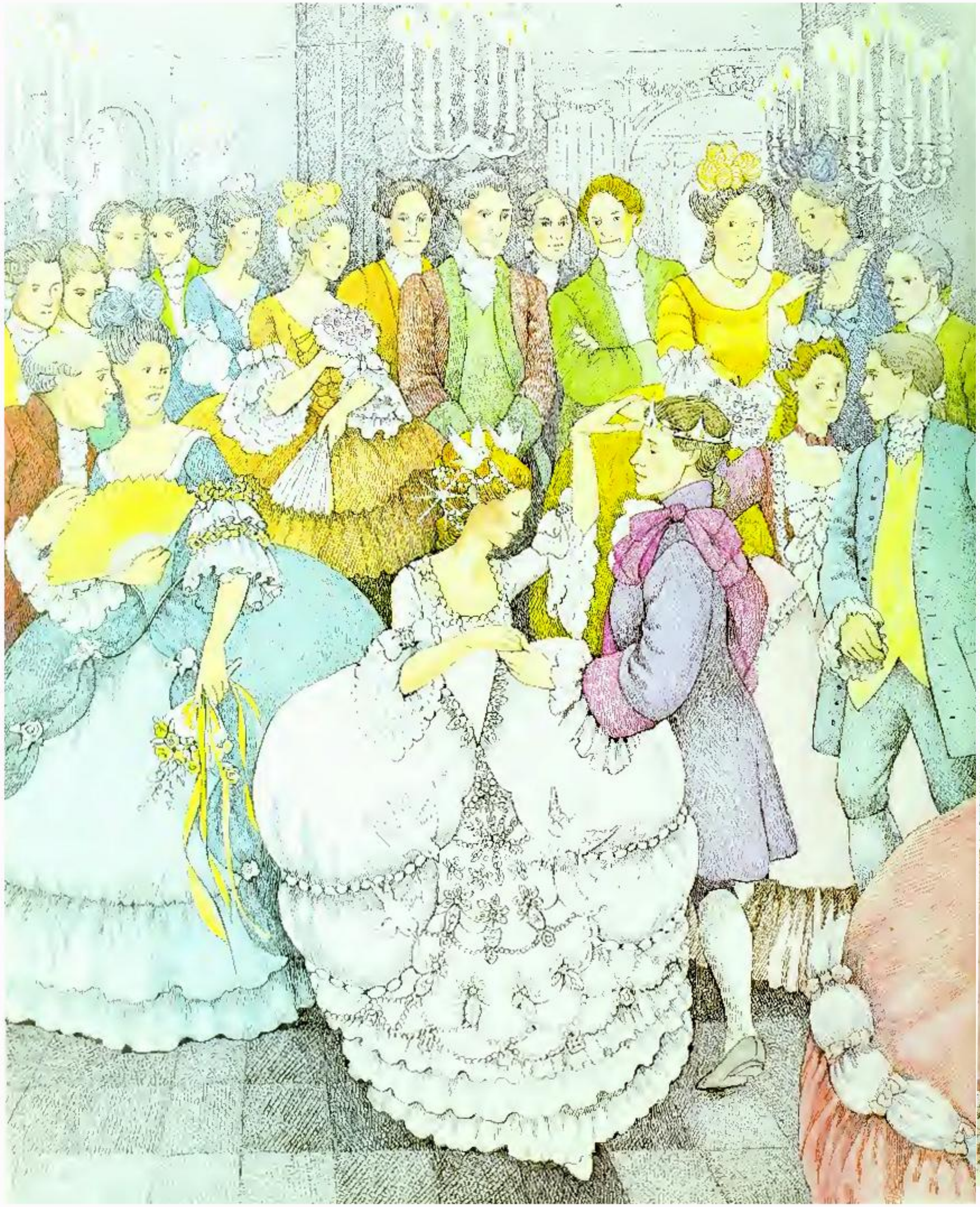


राजा के बेटे को बताया गया था कि एक महान राजकुमारी, जिसे कोई नहीं जानता, जल्द ही आएगी, और वो खुद उसे लेने के लिए दौड़कर बाहर आया। जब वो गाड़ी से उतरी तो उसने उसे अपना हाथ दिया और उसे हॉल में ले गया जहां सब लोग इकट्ठे थे।

तुरंत ही वहां सन्नाटा छा गया। मेहमान उस रहस्यमयी राजकुमारी की खूबसूरती से इतने हैरान थे कि उन्होंने नाचना बंद कर दिया और संगीतकारों ने बजाना बंद कर दिया। फिर पूरे कमरे में धीमी फुसफुसाहट फैल गई:

"आह, वो कितनी सुंदर है! कितनी सुंदर!"

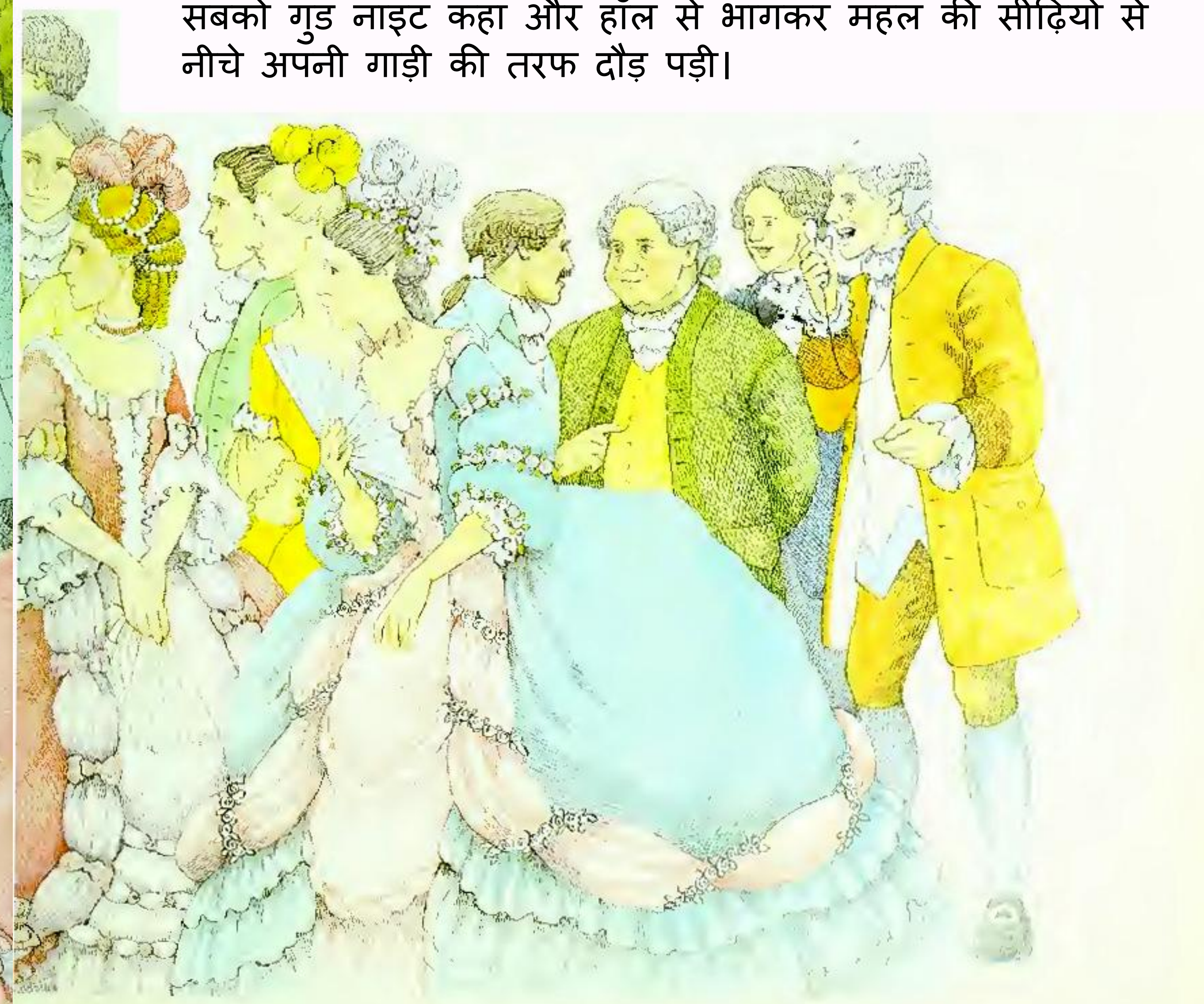


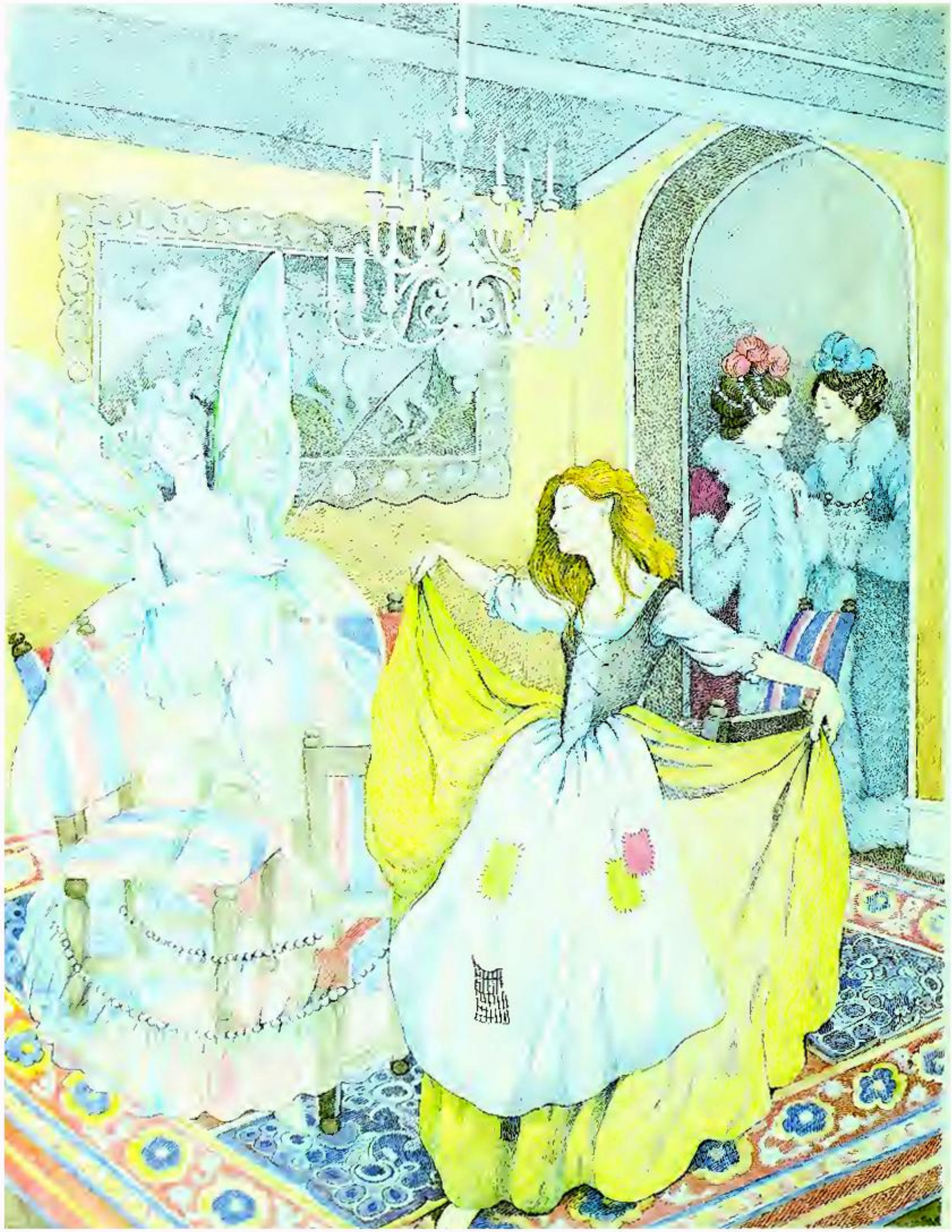


राजा के बेटे ने उसे डांस फ्लोर पर ले जाया और वो बार-बार साथ में डांस करते रहे। एक शानदार दावत परोसी गई, लेकिन राजकुमार ने सिर्फ उसे ही देखा और एक निवाला भी नहीं खाया।

कुछ देर बाद वो उसके पास से उठी और अपनी बहनों के पास जाकर बैठ गई। उसने उनके साथ बहुत प्यार से पेश आकर उन्हें संतरे के टुकड़े दिए जो राजकुमार ने उसे दिए थे। इस तरह अलग से ध्यान पाकर वो बहुत खुश हुईं।

तभी सिंड्रेला ने घड़ी में पौने बारह बजते सुना। जल्दी से उसने सबको गुड नाइट कहा और हॉल से भागकर महल की सीढ़ियों से नीचे अपनी गाड़ी की तरफ दौड़ पड़ी।





जब वो वापस घर पहुंची, तो उसने अपनी गॉडमदर को पाया, उसे धन्यवाद दिया और पूछा कि क्या वो अगले दिन फिर बॉल में जा सकती है। जब सिंड्रेला अपनी गॉडमदर को सब बता रही थी, तभी उसकी दोनों बहनें कमरे में आईं।

"काश तुम वहां होतीं," बहनों ने कहा। "एक अनजान राजकुमारी थी, दुनिया में देखी हुई सबसे सुंदर। वो हमारे साथ बैठी और हमें संतरे दिए।"

"क्या वो सच में इतनी सुंदर थी? और क्या तुम्हें उसका नाम नहीं पता?"

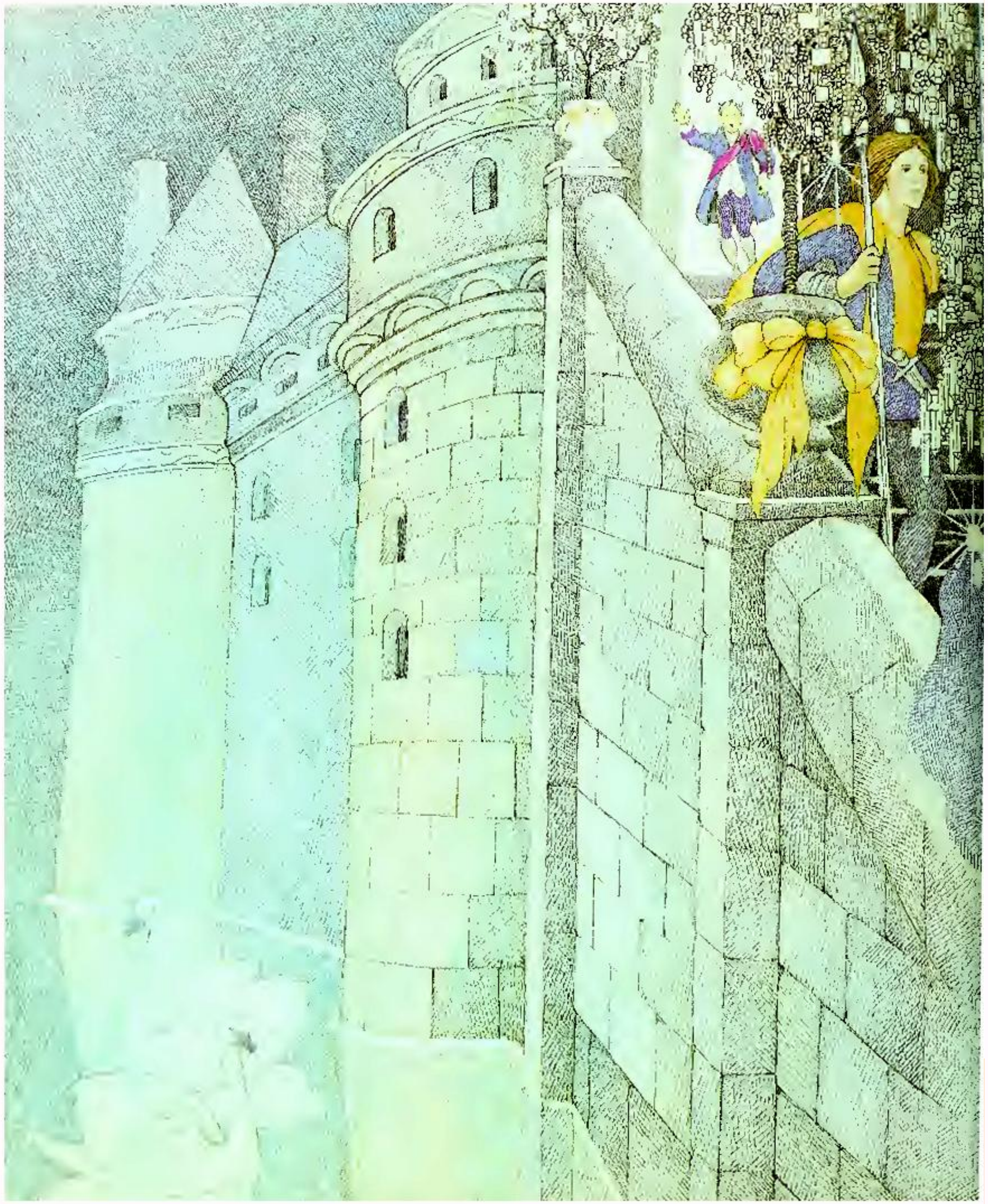
फिर सिंड्रेला बड़ी बहन की तरफ मुड़ी। "ओह प्यारी बहन, क्या तुम मुझे अपना सबसे सादा कपड़ा नहीं दोगी ताकि मैं उस राजकुमारी को खुद देख सकूं?"

"क्या? अपने कपड़े इस गंदी सिंडर- वैंच को दूं? मैं पागल हो गई हूं क्या!" बहन चिल्लाई।

सिंड्रेला को ऐसे ही जवाब की उम्मीद थी और वो मना करने पर बहुत खुश थी। अगले दिन शाम को दोनों बहनें बॉल में गईं और वो भी गई, पहली बार से भी ज्यादा खूबसूरत कपड़ों में। राजा का बेटा हमेशा उसके साथ था और उसकी तारीफों के पुल बांध रहा था। सिंड्रेला इतनी खो गई थी कि वो गॉडमदर की चेतावनी भूल गई और जब घड़ी में आधी रात के 12 बजे, तो उसे लगा अभी 11 ही बजे होंगे।

वो तुरंत उठी और हिरन की तरह फुर्ती से भागी। राजकुमार उसके पीछे दौड़ा, लेकिन पकड़ नहीं पाया। जल्दी में वो अपनी एक कांच की जूती पीछे छोड़ गई, जिसे राजकुमार ने उठाकर अपने पास रख लिया।

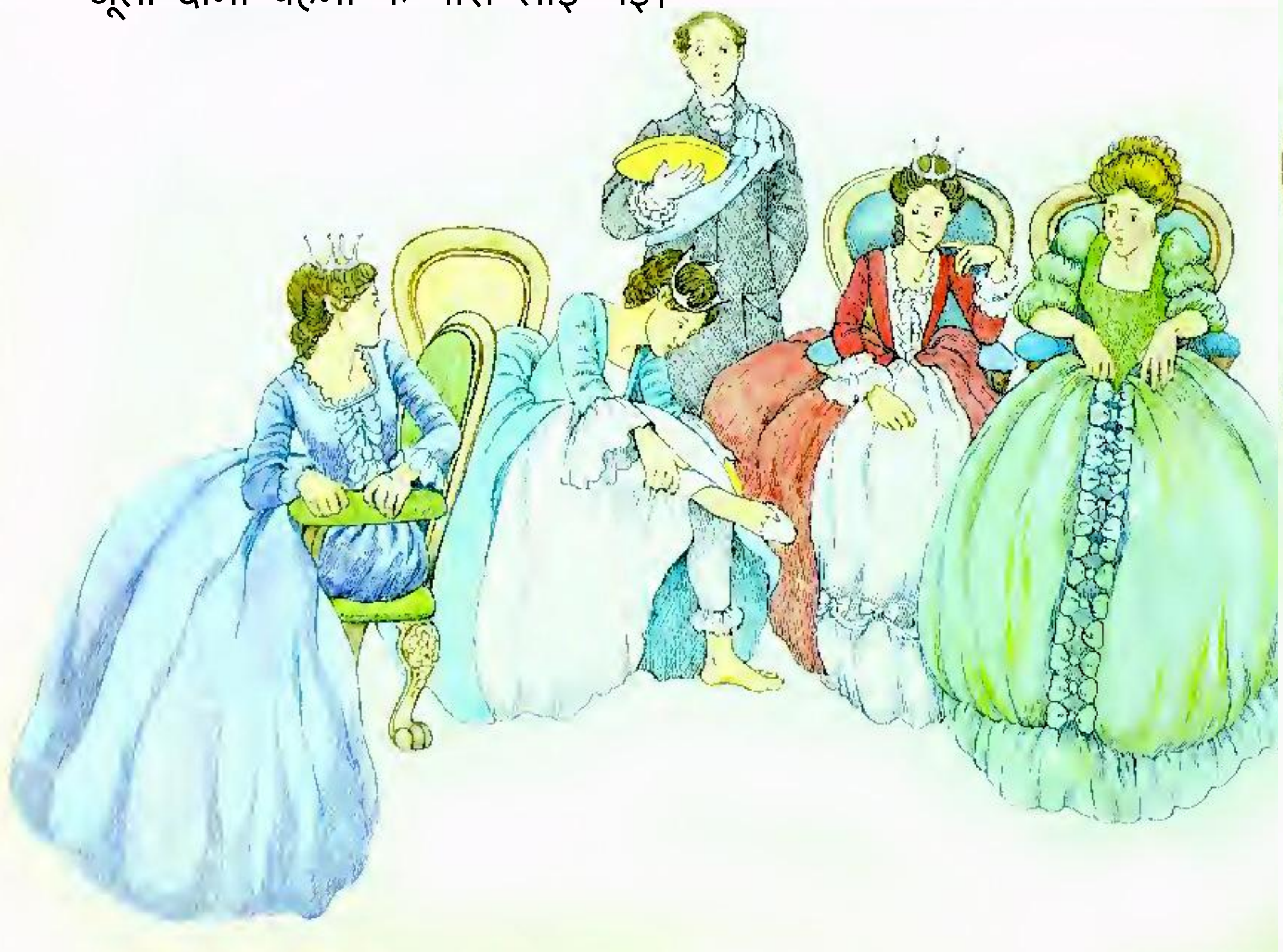
सिंड्रेला की गाड़ी गायब हो चुकी थी और उसे अंधेरे में घर तक दौड़कर जाना पड़ा। उसके शानदार कपड़ों में से सिर्फ दूसरी कांच की जूती बची थी। महल के गेट पर गार्डों से पूछा गया कि क्या उन्होंने कोई राजकुमारी देखी, तो उन्होंने जवाब दिया कि वहां एक फटे-पुराने कपड़ों वाली गरीब गांव की लड़की के अलावा कोई नहीं आया था।



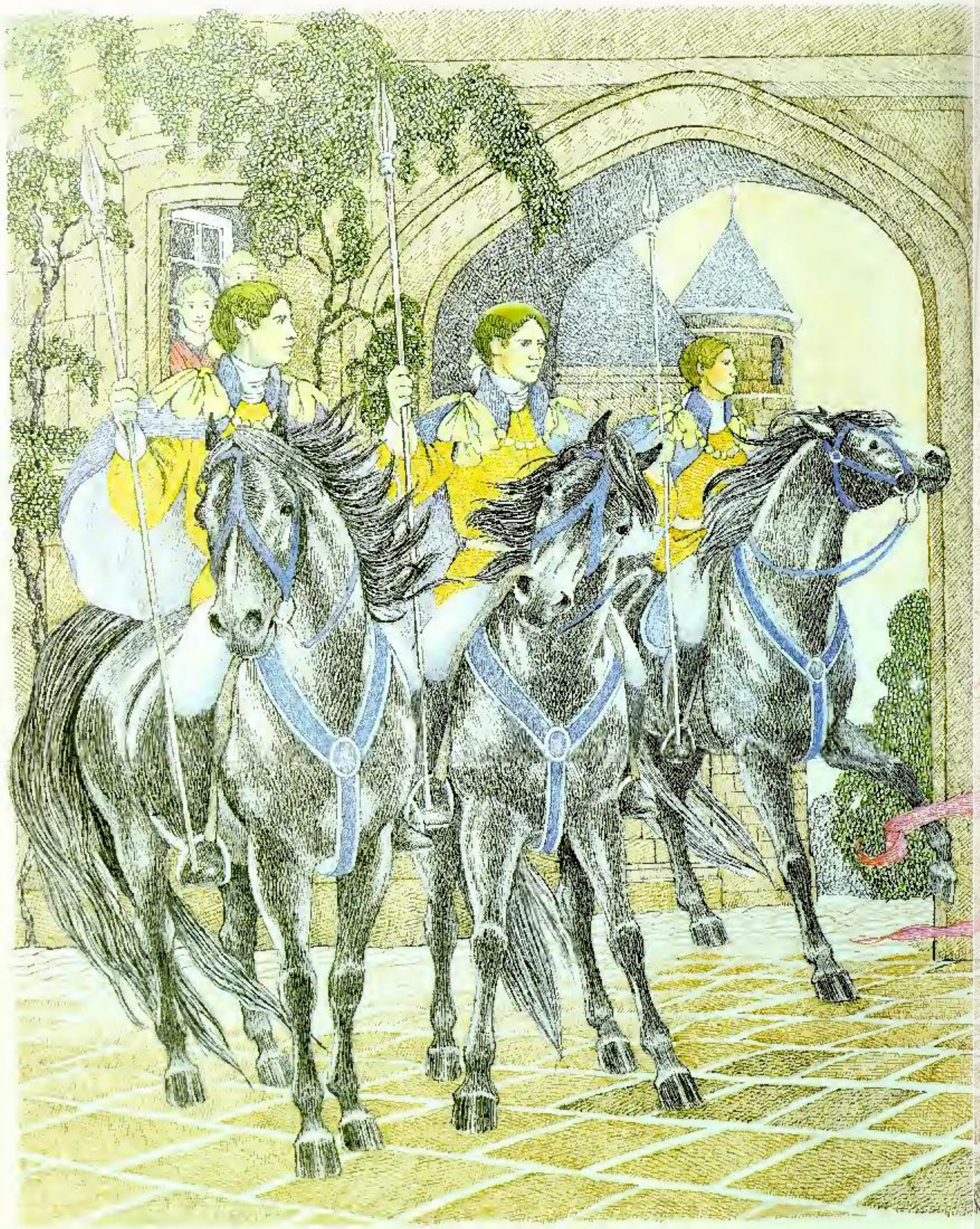
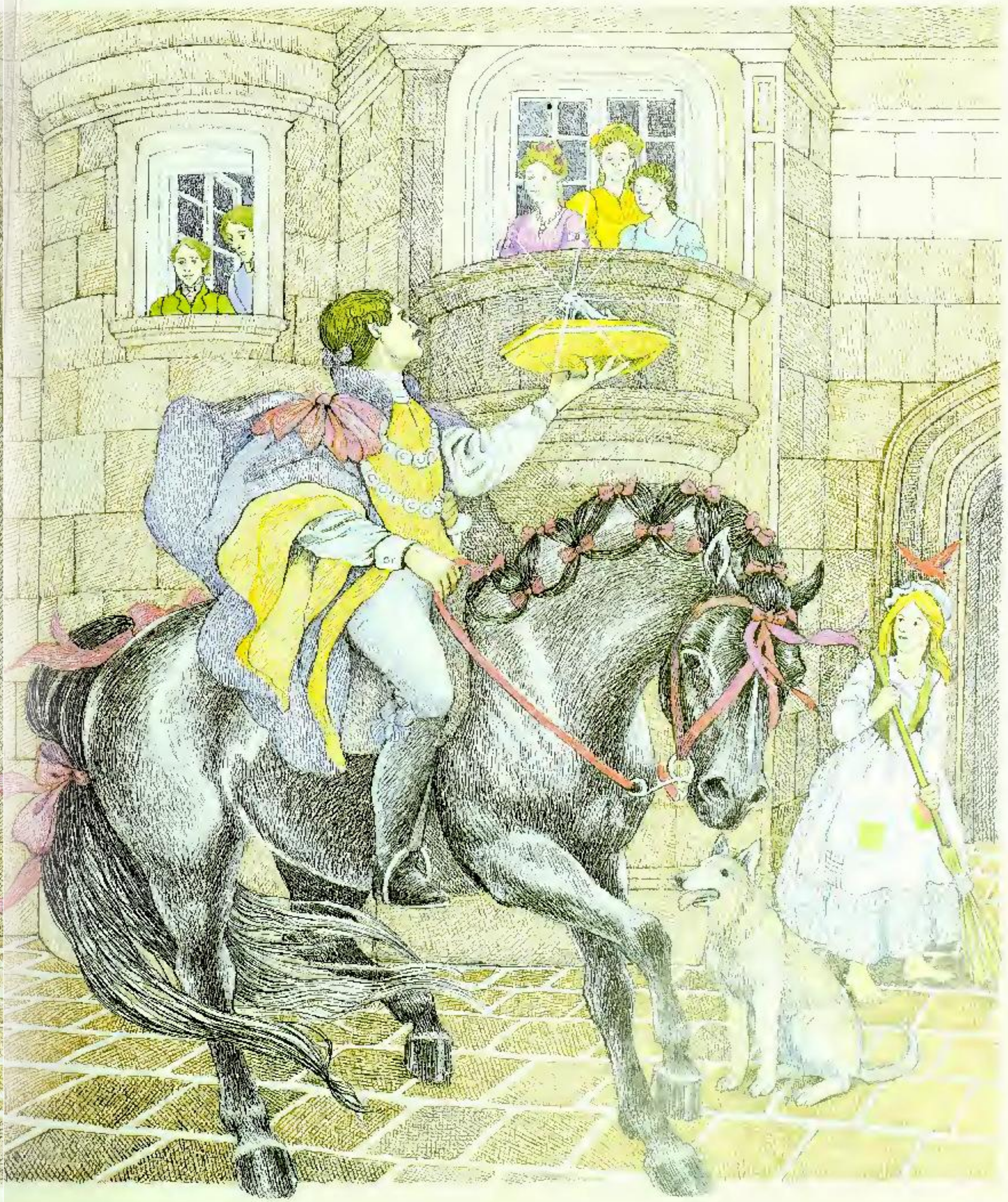

जब दोनों बहनें बॉल से वापस आईं, तो सिंड्रेला ने पूछा कि क्या वो अनजान राजकुमारी फिर से आई थी। उन्होंने कहा,

"हां, लेकिन जैसे ही घड़ी में 12 बजे वो जल्दी में भाग गई। और अब राजा के बेटे के पास सिर्फ वही कांच की जूती थी जो वो छोड़ गई थी। उन्होंने कहा कि राजकुमार का दिल टूटा हुआ है और उसे दोबारा ढूंढने के लिए कुछ भी करेगा"।

ये सब सच था। कुछ दिन बाद राजा के बेटे ने ऐलान करवाया कि वो उसी औरत से शादी करेगा जिसके पैर में ये कांच की जूती फिट आएगी। दूतों ने पहले सभी राजकुमारियों को जूती पहनाई। फिर डचेस को और फिर दरबार की महिलाओं को। लेकिन पूरे राज्य में उन्हें कोई ऐसी औरत नहीं मिली जिसका पैर इतना छोटा हो कि जूती में आए। आखिर में वो जूती दोनों बहनों के पास लाई गई।







उन्होंने बहुत कोशिश की, अपने पैर अंदर घुसाने की, लेकिन वो कामयाब नहीं हो पाईं।

सिंड्रेला भी कमरे में थी और उसने अपनी जूती तुरंत पहचान ली। "क्या मैं देख सकती हूं कि ये मेरे पैर में आती है क्या?" उसने कहा।

उसकी बहनें हंसने और उसे चिढ़ाने लगीं। लेकिन दूत जो जूती लेकर आया था, उसने सिंड्रेला को देखा और पाया कि वो बहुत सुंदर है। उसने कहा कि उसके आदेश थे कि राज्य की हर औरत को ये जूती पहननी होगी।

सिंड्रेला बैठ गई और उसने जूती उसके छोटे से पैर पर रखी। जूती एकदम से आ गई, इतनी आसानी से जैसे मोम की बनी हो।



फिर, जब दोनों बहनें देख रही थीं, सिंड्रेला ने अपनी जेब से दूसरी कांच की जूती निकाली और उसे भी पहन लिया। अचानक उसकी गॉडमदर वहां आ गई और उसने लड़की के फटे-पुराने कपड़ों को अपनी छड़ी से छुआ और वो एक ऐसा गाउन बन गए जो बॉल में पहने हुए गाउन से भी ज्यादा खूबसूरत था।

और अब उसकी दोनों बहनों को पता चल गया कि वही अनजान राजकुमारी थी जिसकी वो इतनी तारीफ कर रही थीं। वो उसके पैरों पर गिर पड़ीं और उसके साथ किए गए बुरे व्यवहार के लिए माफी मांगने लगीं। सिंड्रेला ने उन्हें उठने को कहा और कहा कि उसने उन्हें दिल से माफ कर दिया।



फिर सिंड्रेला को राजकुमार के सामने ले जाया गया। वो उससे बहुत प्यार में डूब गया और कुछ समय बाद उनकी शादी हो गई। सिंड्रेला, जो जितनी सुंदर थी उतनी ही अच्छी भी थी, उसने अपनी दोनों बहनों को महल में रहने की जगह दी, और उसी दिन उनकी शादी भी दरबार के दो सरदारों से करवा दी।